२०: प्रतिपादन-२ : जीवन अमर है

दिनांक - १४/१०/२०११

अस्तित्व में परमाणुएं सत्ता में सम्पृक्त रहने के फलस्वरूप ऊर्जा सम्पन्नता, बल सम्पन्नता, चुम्बकीय बल सम्पन्नतावश क्रियाशील रहना देखा गया है | यहाँ देखने का तात्पर्य ज्ञान चक्षु से देखा है | कैसे देखा है? इसके उत्तर में यही है कि साधना, समाधि, संयमपूर्वक देखा है | सम्पृक्तसम्पृक्तता के फलस्वरूप अर्थात जड़, चैतन्य प्रकृति भींगे, डूबे रहने के अर्थ में ऊर्जा सम्पन्न रहना समझ में आया है | इसी क्रम में मूल चेष्टा का आधार साम्य ऊर्जा होना है, साम्य ऊर्जा में सम्पृक्तसम्पृक्तता ही है; यह समझ में आया है | साम्य ऊर्जा साम्य शक्ति के रूप में प्रकृति में रहना समझ में आया, इसी आधार पर कार्य ऊर्जा है | कार्य ऊर्जा के फलस्वरूप में श्रम, गति, परिणाम होना देखा गया है | ऐसे श्रम, गति, परिणाम विधि से ही परमाणुएं विकास क्रम, विकास रूप में होना भी समझ में आया है | परमाणु में विकासपूर्णता ही गठनपूर्णता है | गठनपूर्णता ही जीवन है | जीवन में ही प्राकृतिक विधि से दस क्रियाएँ सम्पन्न होती हैं | जीवन इन दस क्रियाओं को संतुष्टि सम्पन्न बनाने के लिये जीता है; जिसमें से जीव चेतना विधि से ४.५ (साढ़े चार) क्रियाएँ कार्यरत हुए हैं | बाकी ५.५(साढ़े पाँच) क्रियाएँ चुप रहे , यही मुख्यतः मूल व्यथा है | कार्य ऊर्जा विधि से नैसर्गिकता का प्रभाव होता है | यह तब तक होता है जब तक जीवन अपने लक्ष्य को पूरा नहीं कर लेता है | जीवन का लक्ष्य केवल जागृति है | जागृति केवल विकसित चेतना ही है | विकसित चेतना विधि से ही दस क्रियाओं का जीवन में क्रियाशील रहना चिंतन बोध अनुभव क्रम में समझ में आता है जिसके लिये ही चेतना विकास मूल्य शिक्षा का प्रस्ताव है |

जीवन अक्षय बल, अक्षय शक्ति सम्पन्न है | जीवन नित्य है | जन्म, मृत्यु जीवन के लिये एक घटना है | जीवन विकसित चैतन्य क्रिया का स्वरूप है | शरीर रासायनिक, भौतिक वस्तुओं से रचित रचना है | रचना का विरचना होना भावी है | प्राणकोषाओं से जंगल, झाड़ी, अन्न वनस्पतियां तैयार हुए रहते हैं | इनका विरचना होता है | इसी प्रकार जीव शरीर वंशानुषंगी विधि से गर्भाशय में ही रचित होता है | गर्भाशय से बाहर होने पर पुष्ट होता है | हर एक वंश में पुष्ट होने की अवधि निश्चित रहती है | उसी आधार पर निश्चित अवधि तक पुष्ट होता है | पुष्ट शरीर को हम यौवन कहते हैं | युवावस्था के शरीर को बहुत बहुत दिन तक रखने की इच्छाएं होती हैं | इच्छाएं निःशेष होने के पहले ही वृद्धावस्था का शुरुआत होती है अथवा अकाल मृत्यु होती है | ये सभी देखते ही हैं | सब को समझ में भी आता है | शरीर जब जीवन के लिये उपयोगी नहीं रहता है तब शरीर को जीवन छोड़देता है | इसको दो ही विधियों से होना देखा गया है | अकाल मृत्यु, दुर्घटना-ग्रस्त होना और वृद्धापि वश मृत्यु होना | इन दोनों विधि से शरीर, जीवन के लिये उपयोगी न रहना ही प्रधान बात है | इस क्रम में मनुष्य अपने विवेक का प्रयोग करने पर यही बात बनती है कि जीवन नित्य है,जन्म मृत्यु एक घटना है | सह-अस्तित्ववश शरीर और जीवन के संयुक्त रूप में हर मानव, हर आयु वर्ग में,हर नर-नारी का जीना है | यह समझ में आता है |

इसका प्रयोजन यही है कि समझदार होना, सर्वतोमुखी समाधान होना, समृद्धिपूर्वक जीना, फलस्वरूप वर्तमान में विश्वास होना, जिसका परिणाम स्वरूप में सार्वभौम व्यवस्था होना अनुमानित होता है | ऐसा सार्वभौम व्यवस्था पाने के लिये इच्छा, सर्वेक्षण विधि से सभी मानव में समायी रहती है | अभी तक मानव ज्ञानी, विज्ञानी, अज्ञानी के रूप

में गण्य है | ये तीनों प्रजाति के मानव सार्वभौम व्यवस्था चाहते हैं | इसे ऐसा पूछा गया कि समाधान चाहिए कि नहीं, न्याय चाहिए कि नहीं, सच्चाई चाहिए कि नहीं, पूछने पर सकारात्मक भाग में ही उत्तर मिलता है | इसे देखने पर समझ में आता है कि सभी मानव शुभ चाहते हैं | शुभ अभी तक मनमानी रहा है | रहस्यवाद, आदर्शवाद के अनुसार अनेक मतभेद के रूप में देखने को मिलता है | इन्हीं मतभेदों के अनुसार " मुंडे मुंडे मतिर्भिन्ना: " यह भी कह चुके हैं | इन सभी मुद्दों को याद रखते हुए परिकल्पना करने पर यह समझ में आता है कि हर मानव शुभ चाहता है | शुभ के स्वरूप का ज्ञान न होने के फलस्वरूप "मुंडे मुंडे मतिर्भिन्ना:" है |

भौतिकवाद के अनुसार मानव, सर्वाधिक मानव यह माना है कि सुविधा, संग्रह से सुखी हो सकते हैं | जबकि सुविधा संग्रह का मूल रूप में भौतिक, रासायनिक वस्तुएं ही हैं | यह दोनों वस्तुएं परिणामकारी हैं | पैसा जिसको कहते हैं वह भी मूलतः भौतिक, रासायनिक वस्तु ही है | देखने के रूप में कागज पर छपी हुई संख्या के रूप में है | इस प्रकार मानव भ्रमित होकर भ्रमके अर्थ में सम्पूर्ण कारीगरी किया है | इसे जागृति के अर्थ में पहचानने- निर्वाह करने के अर्थ में ही चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रस्तावित है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

- ए.नागराज | प्रणेता एवं लेखक, मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) | श्री भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला अनूपपुर , म.प्र. भारत